ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 393-394
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

लल्लू लाल जी के प्रेम सागर पर वेदव्यास का प्रभाव

अन्नपूर्णा राय
असि0 प्रोफे0 प्राचीन इतिहास, अखिलभाग्य डिग्री कालेज गोरखपुर (उ0प्र0) भारत।

Received- 02.08.2020, Revised- 06.08.2020, Accepted - 09.08.2020 E-mail: nnurai321@gmail-com

सारांश : ***लल्लू लाल जी द्वारा लिखे गए 'प्रेम सागर' वेदव्यास की श्रीमद् भागवत– महापुराण द्वारा प्रभावित है। हिंदी साहित्य के प्रारंभिक लेखकों में अधिकतर या तो रामकथा से प्रभावित रहे या कृष्ण कथा से। जिनके मूल स्रोत वाल्मीकि और व्यास की रचनाएं रही। कृष्ण चरित्र का सबसे ललित चित्रण व्यास ने श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध में किया है। यह विभिन्न आचार्यो का चिंतन एवं कीर्तन का विषय रहा है। वल्लभाचार्य, माधवाचार्य से होते हुए यह भव प्रवाह सूरदास के सूरसागर घनानंद के भ्रमरगीत से होता हुआ 19वीं सदी में गद्य साहित्य में श्री लल्लू लाल जी के 'प्रेम सागर' में अनुव्रत प्रवाहित होता रहा है। व्यास के विचारों का प्रभाव तो बहुआयामी और बहू व्यापक है। पर यहां हम केवल उनके प्रभाव के एक बिंदु श्री लल्लू लाल जी के 'प्रेम सागर' के संदर्भ में अपने को सीमित रखेंगे।***

कुंजीभूत शब्द– प्रेम सागर, महापुराण, हिन्दी साहित्य, मूल स्रोत, कृष्णचरित्र, ललित चित्रण, दशम स्कंध, चिंतन।

लल्लू लाल जी आगरा के गुजराती ब्राह्मण थे। इनका जन्म 1763 ई० में और मृत्यु 1825 ई० में हुई। सन 1803 में कोलकाता के फोर्ट विलियम कॉलेज के अध्यापक जॉन गिल क्राइस्ट के आदेश से इन्होंने खड़ी बोली गद्य में 'प्रेम सागर' लिखा, जिसमें भागवत के दशम स्कंध की कथा वर्णन की गई। लल्लू लाल की भाषा कृष्णोपासक व्यासो की सीबृजंरजित खड़ी बोली है। 1824ई० में फोर्ट विलियम कॉलेज की नौकरी से पेंशन ले लिए थे।

जिस प्रकार वेद व्यास की रचना श्रीमद् भागवत के दशम स्कंध को 90 वे अध्याय में विभाजित किया गया है उसी प्रकार लल्लू लाल जी ने 'प्रेम सागर' को भी 90 अध्याय में रखा तथा भागवत के प्रत्येक अध्याय के मुख्य घटनाओं के सार पर बल दिया। कथा विन्यास और वर्णन शैली दोनों दृष्टियों से श्री लल्लू लाल जी का 'प्रेम सागर' दशम स्कंध का अनुगमन करता है। 19वीं सदी में भारतीय समाज मुगल प्रभाव से बना हुआ था। प्रशासन, कला, संस्कृति, साहित्य सभी ओर उसका वर्चस्व था। दरबार की भाषा फारसी थी, हिंदी तो अभी प्रारंभिक अवस्था में थी और देवनागरी लिपि के जानकार लोग भी कम थे। यद्यपि कि जायसी का 'पद्यावत', तुलसीदास का 'रामचरित्र मानस' सूरदास का 'सूरसागर' उत्तर भारत में काफी लोकप्रिय हो चुके थे और रीतिकाल के कवियों ने दरबारी राग में श्रृंगार और वीर रस के काव्यों का अनुशीलन कर हिंदी साहित्य को काफी लोक रंजक रूप दे दिया था। घनानंद, रसखान, बिहारी आदि कवियों की कृतियां समाज में काफी ख्याति पा चुकी थी,फिर भी गद्य साहित्य में "चौरासी वैष्णवों की वार्ता" के अलावा कोई प्रभाव कारी रचना या विचार प्रभाव की गद रचना नहीं मिलती। इस व्यास की कृष्ण कथाधार को आम आदमी तक पहुंचाने वाले भगीरथ बने श्री लल्लू लाल जी इन्होंने सहज गद भाषा में इतने रोचक ढंग से इसका किया कि प्रायः सभी हिंदी भाषी लोगों के घरों में रामचरित्र मानस और महाभारत की तरह यह पहुंच गई। इसकी लोकप्रियता से वेदव्यास के प्रभाव का अंदाजा लगाया जा सकता है। आज भी इसकी प्राचीन प्रतियां धर्म प्रिय परिवारों में सभी जगह मिल जाती हैं। वेदव्यास जी ने महाभारत की रचना की तो इतने बड़े महाकाव्य के प्रणायन के पश्चात भी उनके चित्त को शांति नहीं मिली। वे और भी व्यग्र हो उठे।तब अपने चित्त की शांति के लिए भगवान कृष्ण के आनंददायक स्वरूप के वर्णन के रूप में श्रीमद्भागवत की कथा लिखी। ऐसा कर कर उन्होंने चित्त को शांत किया। इसमें उन्होंने कृष्ण के लोक रंजक स्वरूप का चित्रण किया है।

मनुष्य की सहज वृत्ति आनंद की खोज है। वह जीवन के उन अवस्थाओं पर अधिक चिंतन करता है जिसमें सुख–सौंदर्य, आकर्षकता और अहलादक प्रसंग हो। इस दृष्टि से श्री व्यास जी का श्रीमद्भागवत पुराण का दशम स्कंध अत्यंत मुक्त कारी है इसमें भगवान श्री कृष्ण के जन्म से लेकर बाल– क्रीड़ा, रास पुरुषगय संघर्ष, विवाह? श्रृंगार और संतान सुख तक की सारी कथाएं अत्यंत ह्रदय–स्पर्शी ढंग से चित्रित की गई है। प्रारंभ में भगवान के द्वारा पृथ्वी को आशवासन, वासुदेव–देवकी का विवाह और कंस के द्वारा देवकी के 6 पुत्र की हत्या की कथा है। फिर देवताओं द्वारा गर्भ–स्तुति और भगवान का गर्भ–प्रवेश का वर्णन है।

मानव जीवन सरिता के दो सर्वोत्तम तीर्थ हैं– जन्मोत्सव और विवाहोत्सव भारतीय वाङग्मय में इसकी छवि अत्यंत मुग्धकारी है चाहे हम किसी भी रचनाकार की

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

कीर्ति को उठा ले तो पाएंगे कि इन दो अवसरों का चित्रण बेहद को मोहक और व्यापक रूप में वह करता है। भगवान श्री कृष्ण का जन्मोत्सव नंद बाबा के घर मनाया जा रहा है– ' भगवान श्री कृष्ण समस्त जगत के एकमात्र स्वामी है। उनके ऐश्वर्य, माधुर्य, वात्सल्य–सभी अनंत है। वे जब नंद बाबा के ब्रज में प्रकट हुए, उस समय उनके जन्म उत्सव में बड़े–बड़े विचित्र और मंगलमय बाजे बजने लगे। आनंद से मतवाले होकर गोप गढ़ एक दूसरे पर दही, दूध ा, घी और पानी उड़ेलने लगे। नंद बाबा स्वभाव से परम उदार और मनस्वी थे। उन्होंने गोपों को बहुत से वस्त्र, आभूषण और गौवें दीं। (श्रीमद्भागवत दशय स्कंध अ०5, श्लोक 13,14)। देखें इसी जन्म महोत्सव को श्री लल्लू लाल जी कैसे मनाते हैं– जब भाद्रपद बदी अष्टमी बुधवार को आधी रात के समय श्री कृष्ण आए तब यशोदा ने ही पुत्र का मुख देख नंद को बुला अति आनंद माना३३.. सारा संसार इसी का यश गावेगा, यह सुन नंद जी ने कंचन के ?³,रूप के खुर, तांबे की पीठ की दो लाख गौ पाटम्बर उढाय संकल्प की और उनको दान कर ब्राह्मणों को दक्षिणा देय आशीष ले विदा किया।३.. और जितने गोकुल के गोप–ग्वाल थे वह भी अपनी–अपनी नारियों के शिर पर दहेड़िया लिवाय, भाँति–भाँति के भेष बनाए, नाचते, गाते नंद को बध ाई देने आए। आते ही ऐसे दधिकांदो किया कि सारे गोकुल में दही कर दिया, जब दाधिकांदो खेल चुके तब नंद जी ने उनको खिलाया–पिलाया। बागे फहराए तिलक कर पान दे विदा किया। (प्रेम सागर–
अध्याय 6, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव,पृष्ठ 23)। यहां व्यास जी के जन्मोत्सव का चित्र स्पष्ट रुप से श्री लल्लू लाल जी के मानस पर छाया हुआ है।

बालक जब किशोर होने लगता है तो उसकी क्रिया समाज को एक संदेश देती है उसकी मति–गति आगे कैसी होगी और घर –परिवार से बाहर उसकी सक्रियता ज्यादे हो जाती है,सहज ही उसका केंद्र हम उम्र, किशोर –किशोरियों होती हैं। श्री व्यास जी का रास वर्णन विश्व साहित्य की अमूल्य निधि है। श्रीमद्भागवत में श्रृंगार की मिलन और बिरह दोनों दशाओं का भाव–विभोर कर देने वाला चित्रण हुआ है– प्रेमप्रभाव से उन्मत्त गोपियों के साथ भगवान कृष्ण यमुना जी के पावन पुलिन पर जो कपूर के समान चमकीली बालू से जगमग आ रहा था, पदार्पण किया। वह यमुना जी की तरह तरंगों के स्पर्श से शीतल और कुमदिनी का सहज सुगंध से सुवासित वायु के द्वारा सेवित हो रहा था उस आनंदप्रद पुलीन पर भगवान ने गोपियों के साथ क्रीडा की। हाथ फैलाना, आलिंगन करना, गोपियों के हाथ दबाना, उनकी चोटी आदि का स्पर्श करना विनोद करना, नरवक्षत करना, विनोदपूर्ण चितवन से देखना और मुस्कुराना– इन क्रियाओं द्वारा गोपियों के दिव्य काम रस को, परमोज्जवल प्रेमभाव को उत्तेजित करते हुए भगवान श्रीकृष्ण उन्हें क्रीडा द्वारा आनंदित करने लगे। (श्रीमद्भागवत दशम स्कंध अध्याय– 29, श्लोक– 45 ,46)।

इसी तरह वियोग ऋंगार का भी चित्रण है– ' श्री कृष्ण के सहस अंतर्ध्यान जाने पर गोपिया प्रमन्त हो गई और अपने प्रियतम श्रीकृष्ण की चाल–ढाल, हर्ष–विलास और चितवन–बोलन आदि में श्रीकृष्ण की प्यारी गोपियां उनके समान ही बन गई, उनके शरीर में भी वही गति–भति, वही भाव–भंगीमा उतर आयी। वे सर्वथा अपने को भूलकर श्रीकृष्ण रूप हो गई और उन्हीं के लीला–विलास का अनुकरण करती हुई "मैं कृष्ण हूं"– इस प्रकार कहने लगी। (श्रीमद्भागवत 10 के अध्याय– 29 ,श्लोक –3)। गोपियों से पहले जाकर बड़े –बड़े वृक्षों से पूछा – है पीपल, पाकर, और बरगद। श्याम सुंदर अपनी प्रेम भरी मुस्कान और चितवन से हमारा मन चुरा कर चले गए हैं। क्या तुम लोगों ने उन्हें देखा है। (श्रीमद् भागवत दशम स्कंध अध्याय –30 ,श्लोक –5)।

संयोग और वियोग श्रृंगार के दोनों चित्र 'प्रेमसागर' में भी उसी प्रकार श्री लल्लू लाल जी प्रस्तुत किए हैं। ऐसा लगता है किया श्री व्यास जी के दशम स्कंध का भावानुवाद है। देखें – आगे श्री कृष्ण ने अपनी माया को आज्ञा दी कि हम रास करेंगे उसके लिए एक अच्छा स्थान रचा गया३३. ये सुनते ही प्रसन्न हो सब ब्रज युवतियों को साथ ले यमुना तीर को चले वहा जाकर देखें तो चंदमडल से रासमडल के चौतरे की चमक चौगुनी शोभा दे रही है उसके चारों ओर रेती चाँदीनी सी चमक रही है और सुगंधित शीतल मीठी पवन चल रही है। मानसरोवर नाम का एक सरोवर था, गोपी उसके तीर जाकर मन मनमाते सुधरे वस्त्र आभूषण पहन कर नरव– शिखरात्त श्रृंगार कर प्रेम मदमति हो सोच संकोच त्यागकर श्री कृष्ण के साथ मिल बजाने गाने नाचने लगी। (प्रेमसागर अध्याय –30 ,पृष्ठ– 68) इसी प्रकार वियोग श्रृंगार का चित्रण करते हुए श्री लल्लू लाल जी लिखते हैं – श्रीकृष्ण के अंतर्ध्यान होते ही गोपिया विकल होकर चारों तरफ उनको ढूंढने लगती हैं और उन्मत्त होकर प्रकृति के सजीव निर्जीव से पूछती फिरती है– 'इतना बचन सुनते ही सब गोपिया विरह से व्याकुल हो जड़ चेतन से पूछने लगी –

उपर्युक्त संदर्भो से स्पष्ट है कि व्यास जी के विचारों का प्रभाव 19वीं सदी की भारतीय चिंतनधारा पर पड़ा है। मैं मात्र एक व्यक्ति की रचना पर पड़े प्रभाव की ओर संकेत किए हैं, तथास्तु।

*****